अथरामेणवनस्य निर्जनत्वहेतुपश्चेतद्वर्णनं ॥ तदिति ॥ गौरवात्सर्वज्ञः सर्ववक्तापरमगुरुरितिसंभावनयेत्यर्थः ॥ यत्रसतपस्तप्यति तद्वनंकथममृगद्विजं ॥२॥ तादृशंतद्वनंत पश्चर्तुं चरितुं प्रविष्टः ॥३॥४॥ दंडधरोराजा प्रभुः वर्णाश्चमविभागतद्धर्मप्रवर्तनाधिकतः ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ दंडेन क्षत्रियसहजधर्मभूतेनशिक्षणेन ॥ अकारणेच दंडं मापा अथरामेणवनस्य निर्जनत्वहेतुवश्नेतहर्णनं ॥ तदिति ॥ गौरवासर्वज्ञः सर्वक्तापरमगुरुरिनित्तभावनयेव्यर्थः ॥ यञ्चतपस्यित तहनंकथमस्यहिजं ॥२॥ तादरातहनंत प्रथर्तुं चिर्तुं पविष्टः ॥२॥॥ दंडयराराजा प्रभुः वर्णाश्चमविष्ठागतहर्मवर्तनाधिकतः ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ दंडेन क्षत्रिययहरूजयम्भूनेनिराक्षणेन ॥ अकारणेच दंडं नापा भगवंस्तहन्तेचीरंतपस्पप्यतियमसः॥श्वेतोवेदर्भकोराजाकथंतदस्थगिद्धिजं॥ २ ॥ तहनंसकथंराजाशृत्यंमनुजविर्जितं ॥ तपश्चनुंप्रविष्टः सश्चेयानुमनुजविर्जितं ॥ तपश्चनुंप्रविष्टः सश्चेयानुमनुजविर्जितं ॥ तपश्चनुंप्रविष्टः सश्चेयानुमनुजविर्जितं ॥ तपश्चनुंप्रविष्टः सश्चेयानुमनुविद्यन्त । १ ॥ प्रमानुदेहथरः प्रभुः ॥ तस्यपुत्रोमहानासीदिक्ष्वाकुःकुलनंदनः ॥ ५॥ तपुत्रंपूर्वकराज्येनिक्षिप्यभुविद्यनुमन्ति। ए। तस्यपुत्रोमहानासीदिक्ष्वाकुःकुलनंदनः ॥ ५॥ तपुत्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त्रमुन्त

🙎 डेतिनामकरणं पितुःसर्वज्ञत्वादन्वर्थावसायपूर्वकमित्याहावश्यमिति ॥ १ ५ ॥